शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रघुवीर सहाय के 'रामदास' की प्रासंगिकता

कनक कुमारी (शोधार्थी)
हिंदी विभाग, दरभंगा हाउस,
पटना विश्वविद्यालय
पटना, बिहार, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी साहित्य के प्रगतिशील काव्यधारा का स्वर शोषितों और पीड़ितों को समर्पित रहा है। नयी कविता के प्रतिनिधि कवि रघुवीर सहाय की कविता का मूल स्वर यथार्थवादी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में आजादी के बाद के भारत का सटीक चित्रण किया है। उनका साहित्य पत्रकारिता से प्रभावित रहा है। जब अज्ञेय ने उन्हें 'दूसरा सप्तक' में शामिल किया, तब उनके साहित्य पर पर्याप्त चर्चा हुई। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी कविता 'रामदास' की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

रघुवीर सहाय हिन्दी की 'नई कविता' के महत्वपूर्ण कवि हैं। इनके लिये कविता एक संर्घष थी, जो अपने समय की तमाम विद्रूपताओं से टकराती है। उनकी कवितायें पूंजीवादी जनतंत्र की आड़ मे हो रहे शोषण, दमन, अन्याय का पूरी ताकत के साथ प्रतिरोध करती हैं। इनकी गणना हिंदी साहित्य के उन कवियों में की जाती है जिनकी भाषा और शिल्प में पत्रकारिता का प्रभाव होता था और उनकी रचनाओं में आम आदमी की व्यथा झलकती है।

व्यक्तित्व

9 दिसंबर 1929 को लखनऊ के मॉडल हाउस मोहल्ला में रघुवीर सहाय का जन्म हुआ। जब वे 10 वर्ष के थे, तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया और उनके गंभीर स्वभाव का एक बहुत बड़ा कारण यह भी था। बचपन से ही वे बड़े संवेदनशील थे। सन 1944 ई. में रघुवीर सहाय ने मैट्रिक की परीक्षा और 1946 ई. में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से ही रघुवीर सहाय में लिखने-पढ़ने का शौक था। 16 वर्ष की आयु में ही उन्होंने हीरानंद शास्त्री के पुरातत्व संबंधी व्याख्याओं का हिंदी रूपांतरण किया। पिता के देहांत के बाद परिवार की जिम्मेदारी ने उन्हें अखबार की तरफ मोड़ा। यह काम उनके मन का था। उनके शौक ने अर्थोपार्जन का भी अवसर दिया। अर्थोपार्जन के साथ-साथ उन्हें बहुत कुछ करना था। जिसे उन्होंने इस तरह व्यक्त किया है - "पढ़ने के साथ-साथ जब यह काम मुझे मिला तो तीन बातें एक साथ बनी, एक तो मैं पढ़ने के साथ कुछ थोड़ी बहुत आमदनी भी करता रहूँ, दूसरी मुझे कोई रास्ता मिलेगा अभिव्यक्ति का। कुछ कागज - कलम का, भाषा का इस्तेमाल होगा। तीसरी यह कि समाज में मैं जो घूमता फिरता रहता था, यूनिवर्सिटी में या किसी कॉफी हाउस में या किसी बहुत से और वैचारिक, राजनीतिक, सामाजिक - संगठनों में, उसी का यह मनुसंग था। यह आकर्षण भी था कि 100 रुपये मुझे मिलेंगे।"[1] 1945 ई. में रघुवीर सहाय ने जब लेखन की शुरुआत की तब

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद का युग समाप्त हो चुका था। यह वह दौर था जब लेखकों में तुरंत मिली आजादी की एक उमंग थी। आजादी के स्वप्न और अनेक आशाएँ सभी के मन-मस्तिष्क पर झूल रही थीं। इसी समय भाषा से लगाव के कारण रघुवीर सहाय ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। रघुवीर सहाय को लेखन की प्रेरणा बचपन में अध्ययन के दौरान ही मिलने लगी थी फिर बच्चन, पंत, निराला, अज्ञेय, शमशेर आदि से वे काफी प्रभावित रहे। रघुवीर जी खुद कहते हैं - "मैंने 1947 में एक बार बच्चन की कविताएं पढ़ी और उसकी वेदना से मेरा कंठ फूटा, तभी से लिखना आरंभ किया। कुछ समय बाद गिरिजा कुमार माथुर के कुछ सफल और असफल रंगों ने मुझे अपनी थोड़ी बहुत सामर्थ्य का बोध कराया पंत और निराला का अगर असर हुआ तो बहुत टेढ़े तरीके से। अन्य कवियों में अज्ञेय और शमशेर बहादुर ने जिनकी बौद्धिक आत्मानुभूति और बोधगम्य दुरुहता किसी हद तक एक ही सा प्रभाव डालती है, मुझे आगामी रचनाओं के लिए काफी तैयार किया है।"[2] इस दौर में रघुवीर जी अनेक लेखकों के संपर्क में आए। इसी क्रम में अज्ञेय के संपर्क में आना महत्वपूर्ण घटना साबित हुई। रघुवीर जी के साहित्यिक व्यक्तित्व को शिखर तक पहुंचाने में अज्ञेय जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्रकारिता के क्षेत्र में लंबे समय तक इन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। रघुवीर सहाय मानते थे कि कविता और पत्रकारिता दोनों का उद्देश्य एक है - "खबर लिखना बहुत ही रचनात्मक कार्य हो सकता है उतना ही रचनात्मक जितना कविता लिखना। दोनों का उद्देश्य मनुष्य और समाज को ताकत पहुंचाना है।'[3]

पत्रकारिता के क्षेत्र में लम्बे अरसे तक रहने के कारण तत्कालीन राजनैतिक सत्ता की तमाम गतिविधियों को उन्होंने बड़े करीब से देखा। पत्रकारिता उनके लिए केवल आजीविका का साधन मात्र नहीं थी, बल्कि देश सेवा का जरिया भी था रघुवीर जी नयी कविता के युग में उभरकर हमारे सामने आते हैं। यह वह समय था जिसमें लगभग सभी कवियों ने निम्न मध्यमवर्गीय जीवन को अपना विषय बना कर कविता लिखी स रघुवीर जी भी इन्ही में एक थे, या यूँ कहें तो इन कवियों में रघुवीर जी का कद थोड़ा ऊँचा है। दो सौ वर्षों की गुलामी के बाद देश आजाद हुआ। 1951 में गणतंत्र की घोषणा के बाद प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार प्राप्त हुए। पहली बार लोकतान्त्रिक व्यवस्था का अनुभव हुआ। पंचवर्षीय योजनाएँ बनीं, सबने खूब सपने देखे। लेकिन नेहरू युग के पंचवर्षीय योजनाओं की विफलता, अकाल के कारण भुखमरी, नक्सलवादी आंदोलन, कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन आदि ने भारतीय मानस में अनेक प्रकार की हलचल पैदा की। सत्ता में कुर्सी की लड़ाई होने लगी, चूँकि रघुवीर जी का सम्बन्ध समाज और राजनीति से कुछ ज्यादा ही था। उन्होंने राजनितिक शोषण को कविता में उतारने का कार्य किया। उनकी रचनाओं में सत्ता के प्रति जो मोहभंग था उसे उन्होंने बड़ी ही तीखे स्वर में प्रस्तुत किया।

'हंसो हंसो जल्दी हंसो' कविता संग्रह में उन्होंने 'रामदास' कविता में सत्ता के घिनौने सच को उजागर किया। यह कविता भारतीय नागरिक के जीवन की अंतिम परिणति का दस्तावेज है। इस कविता में जो घटना घट रही है वह बार बार घटित होने वाली घटना है, जो न जाने कितनी बार घटित हो चुकी है और इसकी कोई गैरेंटी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नहीं है की कितनी बार घटित होगी। यह कोई घटना नहीं लगती है बल्कि हमारे नागरिक समाज की असफलता है।

'रामदास' की प्रासंगिकता

'रामदास' कविता रघुवीर सहाय की बहुचर्चित कविता है। 'रामदास' नाम कल्पनाओं में गढ़ा एक चरित्र है जो कि हमारी आपकी तरह एक आम इंसान है। रामदास नाम का पात्र समाज में रह रहे आम आदमी का प्रतिनिधित्व कर रहा है। रामदास की हत्या सिर्फ हत्या नहीं है यह हत्या हर उस आम इंसान की है जो सिस्टम से लड़ता है। वह उसकी हत्या नहीं बल्कि हर उस आम इंसान के सोच, हमारे लोकतंत्र, हमारी जो एक आस्था है न्याय के प्रति, उस आस्था की एक तरह से हत्या है।

कानून सबके लिए बराबर है एक समान, लेकिन हमारे समाज में यह कानून सबके लिए एक जैसा काम नहीं करता है। वह जाति, वर्ग, धर्म के अनुरूप अलग-अलग खेमों में बंटा नजर आता है, और इस खाई को पाटना बेमुश्किल नजर आता है। यह खाई सदियों से चली आ रही है, जिसे कोई नहीं पाट पाया है। ना ही इसकी कमियों को दूर करने की कोई रोशनी हमें नजर आती है। यहाँ सवाल अब यह उठता है कि तब कानून है किसके लिए, दूसरा सवाल यह भी कि इस कानून का दुरूपयोग कौन लोग कर रहे हैं, तीसरा हमारा कानून किस तरह काम कर रहा जो न्याय नहीं दिला सकता। कानून को सही ढंग से कार्यान्वित कर एकपक्षीय ना बनाकर सबके हित में काम करनेवाला न्याय तंत्र होना चाहिए।

कानून की तह में जाते हैं, उसकी कार्यप्रणाली को देखते हैं तो पता चलता है कि हमारे लिए बने हुए कानून का मिसयूज अमीर घराने के लोग रसूखदार अधिक से अधिक करते हैं। नेताओं ने तो कानून को मजेदार खेल बना दिया है। कानून नाम के खेल से वे भलीभांति परिचित व उसकी रग-रग से वाकिफ नजर आते हैं। जिस समाज में हम रहते हैं, आये दिन अपराध होते रहते हैं। ऐसा कोई दिन नहीं जिस दिन कोई घटना अमुक स्थान, अमुक जगह नहीं घटी हो, और जब हम अपराध होने की बात करे तो अपराध होना, करना, करवाना आम बात हो गई है। खुलेआम अपराधी इसे अंजाम देते हैं जैसे लगता है उसे पूरी छूट दी गई हो या शह दी गई हो। कुछ अपराध छिपाकर होते हैं तो कुछ धड़ल्ले से सामने ही। इस कविता में यही दिखाने की कोशिश है कि हमारे समाज में अपराधियों का वर्चस्व फल फूल रहा है। उसने अपना एक साम्राज्य स्थापित कर लिया अपने आंतक के बल पर।

जब से रामदास को धमकी मिली उसके चेहरे पर उदासी ने अपना डेरा जमा लिया। यहाँ हम देखते हैं कि रामदास जानता था कि उसकी हत्या होने वाली है, आज उसका अंत होना है। फिर भी वह अनभिज्ञ सा, सबकुछ जानते हुए भी उस चौड़ी सड़क जो कि पतली गली-सी है। वह दिन में निकल पड़ता है -

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी...[4]

इस कविता में एक असहाय आदमी हाथों को अपने पेट पर रखकर अपनी लाचारी बयां कर रहा है। उसकी लाचारी, उसकी हरेक बेबसी की अभिव्यक्ति बहुत ही सुंदर ढंग से की गई है। हमारे समाज की कड़वी सच्चाई को प्रस्तुत करते हुए हमें आईना दिखाती है यह कविता। यहाँ हम

पाते हैं कि आज के समय में रामदास जैसे असहाय बनेने से इंसान का यही हश्र होने वाला है, ऐसा ही हृदयविदारक अंत।

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर
दोनों हाथ पेट पर रख कर
सधे कदम रख कर के आए
लोग सिमट कर आंख गड़ाए
लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी...[5]

एक संवेदनहीन समाज से हम अपेक्षा भी कैसे रखें वह समाज जो रामदास की हत्या को अपनी आंखों से देखता है, घटित होते हर घटनाक्रम से परिचित होते हुए एक चुप्पी साध ली है। सवाल यह भी है कि जिस समाज को पता हो कि रामदास की हत्या होने वाली है, उसने उसे बचाया क्यों नहीं ? या उसने बचाने के लिए एड़ी-चोटी एक क्यों ना कर दी। कुछ तो करता यह समाज पर सबकुछ जानकर भी अनजान बने रहना यह उनकी मूढ़ता की पहचान है। साथ ही समाज यही है ऐसे समाज से हमारी पहचान होती है।

यहाँ रघुवीर जी हमारी आंखों पर बंधी पट्टी की गाँठों को खोलते नजर आते हैं, वह कहते हैं कि किस प्रकार एक आम इंसान को मार दिया जाता है पूरे समाज की आंखों के सामने, उस पूरी भीड़ के रहते भी कुछ नहीं हो पाता। यहाँ मौजूद एक भी इंसान इस हो रही घटना का प्रतिरोध करता नजर नहीं आता, ना ही किसी तरह की रोकने की कोशिश, या उस हो रही हत्या से बचाने की जद्दोजहद।

निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौल कर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था उसने आखिर
उसकी हत्या होगी... [6]

क्या रामदास की यह नियति है ? उसकी हत्या को उसके ही समाज के अपने ही लोग अपनी आँखों से उस एक एक क्षण के गवाह बने। क्या उनकी अंतरात्मा ने उन सभ्य लोगों को नहीं धिक्कारा होगा ? क्यों नहीं उन्होंने रोकने की कोशिश की उसकी हत्या को ?

उन्होंने यह तमाशा देखना ही पसंद किया और एक दूसरे को बताने-दिखाने का सिलसिला चल पड़ा यह देखो रामदास की हत्या हो गयी यह तो मर गया। ऊपर से रघुवीर जी कहते हैं यह कितनी विचित्र बात है कि रामदास की हत्या करने वाला हत्यारा उसी भीड़ को चीरते हुए आगे ठेलते हुए अपना काम कर लौट जाता है। क्या इतना आसान है अपराध को अंजाम देना जहाँ भीड़ इकट्ठी हो और इतना आसान है पेट में चाकू घोंप देना, फिर उसका बेहोश होना, मारा जाना इतनी बेदर्दी से। खून का फैल जाना, अपराधी का उसे आवाज देना, यह दृश्य देखा जाए तो कितना कुछ कहता है। हमारे पूरे सिस्टम की पोल खोल कर रख देता है, और समाज के लोगों की कैसी मानसिकता है उसकी बखिया उधेड़ कर रख देता है।

भीड़ ठेल कर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो - देखो बार बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह
लोग बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी...[7]

इस दृश्य को देखकर कवि का मन विचलित होता है। वह हताश हो निराश मन से ऐसी समाज व्यवस्था, कानून के ना रहने, कानून से खिलवाड़ कर रहे लोगों के प्रति क्षोभ से भर उठता है और इसी क्षोभ से यह रचना निकलती है। उस इंसान की जो लाचार, बेबस है, अपने

जीवन में हर प्रकार से। इस हत्या को रोकने में ना कोई संविधान काम आया ना किसी तरह का कानून, ना ही देश पर शासन कर रहे लोग, कोई भी सरकार। हम यहाँ यह कह सकते हैं कि कुछ देर में घटित होने वाली घटना को कोई भी प्रशासन, उपस्तिथ जमा लोगों की भीड़ नहीं रोक पायी। यह किस समाज में रह रहे हैं हम, यह कैसा शासन, प्रशासन, सरकार जो एक आदमी की रक्षा नहीं कर पाता। उसे न्याय नहीं दिलवाता। कानून के रखवाले को ही नहीं पता हत्या होनेवाली है, ऊपर से अपराधी की सीनाजोरी यह कि दिन दोपहरी में मार कर, खुलेआम अपराध को अंजाम देकर भीड़ से निकल जाता है।

यह घटना आज भी हमारे लिए उतनी ही प्रासंगिक है जितना उस समय लिखी गई सड़े-गले सिस्टम को कौन सुचारू रुप से लाएं ? आज भी कानून व्यवस्था की यही लचर स्थिति है। आज भी कितने रामदास जैसे आम इंसान की हत्या बीच चौराहे पर हो रही, जिसे कोई देखने-सुनने वाला नहीं है। कानून को धत्ता बताकर अपराधी हमारे समाज आज भी फल-फूल रहे हैं।

निष्कर्ष

कवि का विचलित मन अपनी कविता के माध्यम से यह दिखलाने की कोशिश करता है कि यह कैसी बर्बरता है लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हैं। किसी को किसी की फ्रिक नहीं है ना ही किसी प्रकार का मतलब। यह दयनीय स्थिति हमें भी अंदर से झकझोर देती है। यहाँ फिर सवाल उठता है कि कानून किस तरह काम करता है ? न्याय पाने की शर्तें क्या हैं ? कानून के होते हुए इस तरह की घटना का होना बताता है कि अपराधियों को थोड़ा भी कानून का भय नहीं। इस तरह की घटनाओं का आम हो जाना बताता है कि कानून पूर्ण नहीं है, सिर्फ बनाने भर से, उसे इतना तो जरूर मजबूत बना देना चाहिए कि कोई भी अपराध करने के बारे में सोचकर खौफ खाए। अपराध करने के लिए घर से निकलने पर हिचके, उसे कानून की दबिश का हर प्रकार से भय हो। तभी हम कह सकते हैं कानून श्रेष्ठ है। रघुवीर सहाय ने अपनी कविता रामदास नाम के पात्र में उसके जीवन में घटित घटना को, अपनी सच्चाई को पूरे समाज के सामने लाते हैं। आज भी यह कविता हमारे समय में अपनी प्रासंगिकता को दर्ज कराती नजर आती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रघुवीर सहाय रचनावली भाग - 3 पृ. 501
2. दूसरा सप्तक सं. अज्ञेय पृ. 138
3. रघुवीर सहाय रचनावली भाग -4 पृ. 13
4.रघुवीर सहाय रचनावली भाग - 1 पृ. 169
5.वही पृ. 169
6.वही पृ. 169
7.वही पृ. 169